

## झारखण्ड के रामगढ़ जिला में उराँव जनजाति की महिलाओं की सामाजिक स्थिति: एक समग्र विश्लेषण

सुमन कुमारी<sup>1</sup>, डॉ रश्मि<sup>2</sup>

<sup>1</sup> शोधार्थी, समाजशास्त्र विभाग राधा गोविंद विश्वविद्यालय, रामगढ़, झारखण्ड भारत

<sup>2</sup> एसोसिएट प्रोफेसर समाजशास्त्र विभाग राधा गोविंद विश्वविद्यालय, रामगढ़, झारखण्ड, भारत

### सारांश

झारखण्ड के रामगढ़ जिले सहित संपूर्ण क्षेत्र में उराँव जनजाति की महिलाओं की सामाजिक स्थिति ऐतिहासिक सशक्तिकरण और वर्तमान चुनौतियों के बीच एक जटिल समग्रता प्रस्तुत करती है। ऐतिहासिक रूप से, उराँव समाज में महिलाओं ने सामुदायिक नेतृत्व की एक सुदृढ़ परंपरा स्थापित की है, जिसका प्रमाण सिनगीदाई, चम्पू दई और कईली दई जैसी वीरांगनाओं के किस्सों से मिलता है, जिन्होंने योद्धा के रूप में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी। इस विरासत का प्रतीक आज भी उराँव महिलाओं द्वारा ललाट पर गोदने वाली तीन लकीरों वाला गोदना है - हालाँकि, वर्तमान समय में इन महिलाओं के सामने कई गंभीर चुनौतियाँ हैं। राजनीतिक क्षेत्र में उनका प्रतिनिधित्व पंचायत स्तर तक तो दिखता है, लेकिन उच्च सदनों में यह नगण्य है - समाज के भीतर ही डायन-बिसाही (डायन होने का झूठा आरोप) जैसी कुरीतियाँ आदिवासी महिलाओं को प्रमुख रूप से निशाना बनाती हैं। इसके अलावा, विस्थापन ने भी उराँव महिलाओं को विशेष रूप से प्रभावित किया है, जिसके कारण उन्हें बड़े शहरों में घरेलू नौकरानी का काम करने को मजबूर होना पड़ता है। इन चुनौतियों के बावजूद, शिक्षा के प्रसार, संवैधानिक अधिकारों के प्रति जागरूकता और सामुदायिक एकजुटता के नए प्रयासों के माध्यम से उराँव महिलाओं में अपनी सामाजिक स्थिति को सुधारने और ऐतिहासिक गरिमा को पुनः प्राप्त करने की दिशा में बदलाव के संकेत दिखाई दे रहे हैं।

**मूलशब्द:** उराँव जनजाति, महिलाओं की सामाजिक स्थिति, रामगढ़ जिला, ऐतिहासिक सशक्तिकरण, वर्तमान चुनौतियाँ, सामुदायिक नेतृत्व

### प्रस्तावना

झारखण्ड राज्य अपनी समृद्ध आदिवासी संस्कृति और परंपराओं के लिए विख्यात है, जहाँ उराँव (जिन्हें अपनी भाषा में 'कुडुख' कहा जाता है) एक प्रमुख जनजाति हैं। रामगढ़ जिला झारखण्ड के उन क्षेत्रों में से एक है जहाँ उराँव जनजाति की महत्वपूर्ण आबादी निवास करती है। उराँव समाज की महिलाओं की सामाजिक स्थिति एक जटिल और बहुआयामी विषय है जो परंपरा और आधुनिकता के बीच संतुलन बनाने का प्रयास कर रही है। यह लेख रामगढ़ जिला में उराँव महिलाओं की सामाजिक, आर्थिक, शैक्षिक और राजनीतिक स्थिति का गहन विश्लेषण प्रस्तुत करता है तथा उनकी चुनौतियों और सशक्तिकरण के अवसरों को रेखांकित करता है।

उराँव महिलाओं की स्थिति को समझने के लिए केवल सतही अध्ययन पर्याप्त नहीं है; इसके लिए उनकी ऐतिहासिक पृष्ठभूमि, सांस्कृतिक मान्यताओं, धार्मिक प्रथाओं और आर्थिक परिस्थितियों का समन्वित अध्ययन आवश्यक है। रामगढ़ जिला एक ऐसा क्षेत्र है जहाँ विकास की प्रक्रिया तेजी से हो रही है, लेकिन साथ ही यहाँ आदिवासी समुदाय अपनी पारंपरिक पहचान को बनाए रखने का प्रयास कर रहे हैं। इस संदर्भ में उराँव महिलाएं एक ओर तो सांस्कृतिक वाहक की भूमिका निभा रही हैं, तो दूसरी ओर आधुनिक शिक्षा और रोजगार के अवसरों का लाभ उठाकर अपनी स्थिति में सुधार लाने का प्रयास कर रही हैं।

इस लेख को तैयार करने के लिए गुणात्मक शोध पद्धति का उपयोग किया गया है। विभिन्न प्रकाशित साहित्य, शोध पत्रों, सरकारी रिपोर्टों और ऑनलाइन स्रोतों से प्राप्त जानकारी का विश्लेषण किया गया है। रामगढ़ जिला के संदर्भ में उराँव महिलाओं की स्थिति को समझने के लिए मौजूदा साहित्य का सिंथेटिक विश्लेषण प्रस्तुत किया गया है। तथ्यों की पुष्टि के लिए साहित्यिक सन्दर्भों का उपयोग किया गया है जिन्हें अंत में संदर्भ ग्रन्थ सूची में शामिल किया गया है।

तालिका 1: उराँव जनजाति का ऐतिहासिक विकास क्रम

कालखंड	प्रमुख घटनाएँ	महिलाओं की स्थिति पर प्रभाव
प्राचीन काल	दक्कन/कोंकण से छोटानागपुर में प्रवास	कृषि और वन संसाधनों पर आधारित जीवन
ब्रिटिश काल	भूमि अधिग्रहण और वन कानून	पारंपरिक अधिकारों का हनन
स्वतंत्रता के बाद	झारखंड राज्य गठन (2000)	राजनीतिक प्रतिनिधित्व में वृद्धि
वर्तमान युग	औद्योगिकरण और शहरीकरण	रोजगार और शिक्षा में नए अवसर

### उराँव जनजाति: ऐतिहासिक पृष्ठभूमि और सांस्कृतिक संदर्भ

उराँव जनजाति झारखण्ड की दूसरी सबसे बड़ी जनजाति है जो द्रविड़ भाषा-परिवार से संबंधित है। इनकी भाषा कुडुख है जिसका अर्थ 'मनुष्य' होता है। उराँव परंपरा के अनुसार इनका मूल निवास स्थान दक्कन या कोंकण रहा है, जहाँ से ये झारखण्ड के विभिन्न क्षेत्रों में आकर बसे। रामगढ़ जिला में उराँव समुदाय की उपस्थिति ऐतिहासिक रूप से महत्वपूर्ण रही है और यहाँ के सांस्कृतिक परिदृश्य को आकार देने में इनका योगदान रहा है। उराँव समाज 14 प्रमुख गोत्रों में विभाजित है - लकड़ा, रुंडा, गारी, तिकी, किस्पोट्टा, टोप्पो, एक्का, लिंडा, मिंज, कुजुर, बांडी, बेक, खलखो और केरकेट्टा - यह गोत्र व्यवस्था विवाह संबंधों और सामाजिक संगठन को नियंत्रित करती है। उराँव समाज पितृसत्तात्मक और पितृवंशीय है जहाँ पिता ही परिवार का मुखिया होता है हालांकि उराँव महिलाएं पारिवारिक और सामाजिक निर्णयों में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं, फिर भी पारंपरिक पदानुक्रम में उनकी स्थिति पुरुषों के समकक्ष नहीं है। उराँव समाज की धार्मिक मान्यताएं प्रकृति आधारित हैं जिनमें धर्मेश सर्वोच्च देवता हैं जिनकी तुलना सूर्य से की जाती है। अन्य प्रमुख देवताओं में ठाकुर देव (ग्राम-देवता), मांग बरू (पहाड़ देवता), डीहवार (सीमांत देवता) और पूर्वजात्मा (कुल देवता) शामिल हैं। इन सभी धार्मिक प्रथाओं में महिलाओं की सहभागिता महत्वपूर्ण है, विशेषकर सरहुल और करम जैसे प्रमुख त्योहारों में।

**तालिका 2:** उराँव जनजाति की मुख्य विशेषताएँ

पहलू	विवरण
भाषा	कुड़ुख (द्रविड़ परिवार)
मूल निवास	दक्कन/कोंकण क्षेत्र
सामाजिक व्यवस्था	पितृसत्तात्मक, 14 गोत्रों में विभाजित
प्रमुख त्योहार	सरहुल, करमा
मुख्य देवता	धर्मेश (सूर्य के समतुल्य)
पारंपरिक पेशा	कृषि, वनोपज संग्रह

**रामगढ़ जिले में उराँव बस्तियों का विकास**

रामगढ़ जिला झारखण्ड के संथाल परगना प्रशासनिक प्रभाग के अंतर्गत आता है। इस क्षेत्र में उराँव समुदाय के लोग मुख्यतः कृषि आधारित बस्तियों में निवास करते हैं। ग्रामीण क्षेत्रों में उराँव महिलाओं ने परंपरागत रूप से समुदाय की सांस्कृतिक और सामाजिक संरचना को संरक्षित रखने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। रामगढ़ के उराँव समुदाय की विशेषता यह है कि यहाँ के लोगों ने पारंपरिक और आधुनिक विकास के बीच एक सामंजस्य स्थापित किया है, जिसका महिलाओं की सामाजिक स्थिति पर गहरा प्रभाव पड़ा है।

**तालिका 3:** रामगढ़ जिले में उराँव जनजाति का जनसांख्यिकीय विवरण

वर्ष	कुल जनसंख्या	उराँव जनसंख्या	उराँव महिला जनसंख्या	साक्षरता दर (महिला)
2001	2,50,000 (अनुमा.)	75,000 (अनुमा.)	37,500 (अनुमा.)	35% (अनुमा.)
2011	2,80,000 (अनुमा.)	84,000 (अनुमा.)	42,000 (अनुमा.)	48% (अनुमा.)
2023	3,20,000 (अनुमा.)	96,000 (अनुमा.)	48,500 (अनुमा.)	58% (अनुमा.)

**रामगढ़ जिले में उराँव समाज**

रामगढ़ जिला झारखण्ड का एक खनिज समृद्ध क्षेत्र है जो कोयला खनन और औद्योगिक गतिविधियों के लिए जाना जाता है। इस कारण यहाँ रोजगार के अवसर तो उपलब्ध हैं, लेकिन साथ ही पारंपरिक आदिवासी जीवनशैली पर भी प्रभाव पड़ा है। रामगढ़ में उराँव समुदाय के लोग ग्रामीण और शहरी दोनों क्षेत्रों में निवास करते हैं। ग्रामीण इलाकों में रहने वाले उराँव परिवार अभी भी पारंपरिक व्यवसायों जैसे कृषि, वनोपज संग्रह और शिल्पकारिता में संलग्न हैं, जबकि शहरी क्षेत्रों में रहने वाले उराँव समुदाय के लोग शिक्षा, सरकारी नौकरियों और अन्य आधुनिक व्यवसायों की ओर अग्रसर हैं। रामगढ़ के उराँव समाज में सामाजिक संरचना अभी भी पारंपरिक गाँव पंचायत प्रणाली द्वारा संचालित होती है, जिसे स्थानीय भाषा में 'पचोरा' कहा जाता है, इस पंचायत प्रणाली में महिलाओं की भूमिका सीमित है, हालांकि हाल के वर्षों में इसमें सुधार देखने को मिला है। ग्राम पंचायत का नेतृत्व महतो करता है जो गाँव का सामाजिक-प्रशासनिक प्रबंधन करता है, जबकि पाहन धार्मिक प्रधान की भूमिका निभाता है। उराँव समाज में एक कहावत प्रचलित है – "पाहन गांव बनाता है, महतो गांव चलाता है"।

**उराँव महिलाओं की सामाजिक स्थिति**

पारिवारिक संरचना और लैंगिक भूमिका का उराँव समाज में परिवार की संरचना पितृसत्तात्मक है जहाँ पुरुष को परिवार का मुखिया माना जाता है। महिलाओं की भूमिका मुख्यतः घरेलू कार्यों तक सीमित है – जैसे खाना बनाना, बच्चों की देखभाल, पशुओं की देखभाल, और कृषि कार्यों में सहयोग करना। हालांकि, कृषि कार्यों में महिलाओं का योगदान पुरुषों के बराबर ही होता है, फिर भी उन्हें निर्णय लेने की प्रक्रिया में कम ही शामिल किया जाता है।

रामगढ़ जिले के ग्रामीण क्षेत्रों में उराँव महिलाएं कृषि और वनोपज संग्रह के कार्यों में सक्रिय रूप से भाग लेती हैं। धान की

रोपाई, निराई, कटाई और दुलाई जैसे कार्यों में महिलाओं की भागीदारी पुरुषों से अधिक होती है। इसके बावजूद जमीन पर मालिकाना हक ज्यादातर पुरुषों के नाम पर ही है, जिसके कारण महिलाओं की आर्थिक निर्भरता पुरुषों पर बनी रहती है।

**शिक्षा का स्तर और शैक्षिक सहभागिता****तालिका 4:** रामगढ़ जिले में उराँव महिलाओं की शिक्षा स्थिति (2023 के अनुमानित आंकड़े)

शैक्षिक स्तर	नामांकन दर (%)	ड्रॉपआउट दर (%)	प्रमुख चुनौतियाँ
प्राथमिक शिक्षा	85%	15%	स्कूल की दूरी अवसरचरणा की कमी
माध्यमिक शिक्षा	65%	35%	घरेलू कार्य, आर्थिक कारण
उच्च माध्यमिक	45%	55%	बाल विवाह, शिक्षकों की कमी
उच्च शिक्षा	15%	–	वित्तीय बाधाओं, सामाजिक मानदंड

रामगढ़ जिले में उराँव महिलाओं की शिक्षा स्थिति मिश्रित तस्वीर प्रस्तुत करती है। ग्रामीण क्षेत्रों में महिला साक्षरता दर पुरुषों की तुलना में काफी कम है। इसके कई कारण हैं वृ स्कूलों की दूरी, आर्थिक संकट, पारंपरिक मान्यताएं, और कम उम्र में विवाह का होना। हालांकि शहरी क्षेत्रों में स्थिति में सुधार देखने को मिला है जहाँ उराँव महिलाएं उच्च शिक्षा ग्रहण कर शिक्षिका, नर्स, और अन्य व्यवसायों में अपना योगदान दे रही हैं।

सरकारी आंकड़ों के अनुसार, रामगढ़ जिले में उराँव महिलाओं की साक्षरता दर राज्य की औसत से कुछ कम है। हाल के वर्षों में सरकारी योजनाओं और गैर-सरकारी संगठनों के प्रयासों से लड़कियों की शिक्षा को बढ़ावा मिला है, लेकिन अभी भी माध्यमिक शिक्षा के बाद लड़कियों का ड्रॉपआउट दर काफी ऊँचा है।

**आर्थिक स्थिति और आजीविका के स्रोत**

रामगढ़ जिले में उराँव महिलाओं की आर्थिक स्थिति विविधतापूर्ण है। ग्रामीण क्षेत्रों में महिलाएं मुख्यतः कृषि, श्रम, वनोपज संग्रह, और पशुपालन जैसे कार्यों में संलग्न हैं। कुछ महिलाएं स्वयं सहायता समूहों के माध्यम से हस्तशिल्प निर्माण, टोकरी बनाने, और हथकरघा जैसे कार्यों में भी हैं।

शहरी क्षेत्रों में उराँव महिलाएं शिक्षण, नर्सिंग, सरकारी नौकरियों, और छोटे व्यवसायों में अपनी भागीदारी दर्ज करा रही हैं। कोयला खदानों और औद्योगिक इकाइयों में भी कुछ महिलाएं काम करती हैं, लेकिन उनकी संख्या अभी भी कम है। एक चिंताजनक पहलू यह है कि मजदूरी में लैंगिक असमानता अभी भी विद्यमान है – समान कार्य के लिए महिलाओं को पुरुषों की तुलना में कम मजदूरी मिलती है।

**तालिका 5:** उराँव महिलाओं की आर्थिक सहभागिता के क्षेत्र

ग्रामीण क्षेत्र	शहरी क्षेत्र
कृषि श्रमिक	शिक्षण
वनोपज संग्रह	नर्सिंग
पशुपालन	सरकारी नौकरियाँ
हस्तशिल्प निर्माण	छोटे व्यवसाय
मजदूरी	औद्योगिक श्रमिक

**सांस्कृतिक और धार्मिक भूमिका**

उराँव समाज में महिलाओं की सांस्कृतिक और धार्मिक भूमिका काफी महत्वपूर्ण है। सरहुल और करमा जैसे प्रमुख त्योहारों में महिलाएं पारंपरिक नृत्य और गीतों के माध्यम से सक्रिय भागीदारी निभाती हैं। सरहुल त्योहार, जो साल वृक्ष के नीचे मनाया जाता है, में महिलाएं प्रकृति पूजा में केन्द्रीय भूमिका निभाती हैं।

उर्राँव महिलाएँ लोक गीतों और लोक कथाओं की वाहक के रूप में भी कार्य करती हैं, जो उनकी सांस्कृतिक विरासत को अगली पीढ़ी तक पहुँचाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं। डॉ. तेतः उर्राँव जैसी विद्वानों ने 'उर्राँव लोक साहित्य' जैसे ग्रंथों के माध्यम से इस सांस्कृतिक विरासत को संरक्षित करने का कार्य किया है। धार्मिक प्रथाओं में, हालांकि पाहन (पुजारी) का पद पारंपरिक रूप से पुरुषों के पास ही है, लेकिन महिलाएँ घरेलू अनुष्ठानों और पूर्वज पूजा में प्रमुख भूमिका निभाती हैं। उर्राँव समाज में गोदना (पारंपरिक टैटू) की प्रथा भी प्रचलित है जिसे महिलाएँ सौंदर्य और पहचान के प्रतीक के रूप में अपनाती हैं।

### राजनीतिक सहभागिता और निर्णय प्रक्रिया

रामगढ़ जिले में उर्राँव महिलाओं की राजनीतिक सहभागिता सीमित है। पारंपरिक ग्राम पंचायत (पचोरा) में महिलाओं की प्रतिनिधित्व नगण्य के बराबर रही है। हालांकि पंचायती राज व्यवस्था में महिलाओं के लिए 50% आरक्षण के कानून ने स्थिति में सुधार किया है, फिर भी अक्सर महिलाएँ पुरुषों के प्रभाव में कार्य करती हैं और वास्तविक निर्णय लेने की शक्ति से वंचित रह जाती हैं। राज्य और राष्ट्रीय स्तर की राजनीति में उर्राँव महिलाओं की भागीदारी अभी भी नगण्य है। हालांकि स्थानीय स्तर पर स्वयं सहायता समूहों और गैर-सरकारी संगठनों के माध्यम से महिलाएँ सामूहिक निर्णय लेने की प्रक्रिया में भागीदारी सीख रही हैं और अपनी राजनीतिक चेतना को विकसित कर रही हैं।

### उर्राँव महिलाओं के सामने चुनौतियाँ

रामगढ़ जिले की उर्राँव महिलाओं के सामने शिक्षा की कमी एक प्रमुख चुनौती है। गरीबी, स्कूलों की दूरी, घरेलू जिम्मेदारियों, और सामाजिक रूढ़िवादिता लड़कियों की शिक्षा में बाधक हैं। इसके अलावा माध्यमिक स्तर तक आते-आते लड़कियों का ड्रॉपआउट दर बढ़ जाता है, जिसका कारण कम उम्र में विवाह और यौन उत्पीड़न की आशंका है। स्वास्थ्य सुविधाओं की कमी भी एक गंभीर चुनौती है। ग्रामीण क्षेत्रों में प्रसव के दौरान मृत्यु दर, कुपोषण, और एनीमिया जैसी समस्याएँ आम हैं। पारंपरिक मान्यताओं के कारण महिलाएँ आधुनिक स्वास्थ्य सुविधाओं का लाभ नहीं उठा पातीं और झाड़ू-फूक और स्थानीय हकीमों पर निर्भर रहती हैं।

### आर्थिक और सामाजिक चुनौतियाँ

आर्थिक क्षेत्र में उर्राँव महिलाओं के सामने रोजगार के अवसरों की कमी, मजदूरी में असमानता, और संपत्ति पर अधिकार का अभाव जैसी चुनौतियाँ हैं। सूक्ष्म वित्त और स्वयं सहायता समूहों तक पहुँच की कमी के कारण महिलाएँ स्वरोजगार नहीं अपना पातीं। सामाजिक स्तर पर पितृसत्तात्मक मानसिकता, घरेलू हिंसा, और शराबखोरी जैसी सामाजिक बुराइयाँ महिलाओं के विकास में बाधक हैं। एक शोध के अनुसार झारखण्ड के आदिवासी समुदायों में शराब की लत एक गंभीर समस्या है जिसका सीधा प्रभाव महिलाओं पर पड़ता है।

### सांस्कृतिक और पर्यावरणीय चुनौतियाँ

वैश्वीकरण और शहरीकरण के प्रभाव से उर्राँव समाज की पारंपरिक संस्कृति और सामाजिक मूल्य खतरे में हैं। युवा पीढ़ी का पश्चिमी सभ्यता की ओर आकर्षित होना पारंपरिक जीवनशैली के लिए खतरा उत्पन्न कर रहा है। रामगढ़ एक औद्योगिक क्षेत्र होने के कारण पर्यावरण प्रदूषण की समस्या से भी जूझ रहा है। कोयला खनन और उद्योगों के कारण जल, वायु और भूमि प्रदूषण में वृद्धि हुई है, जिसका सीधा प्रभाव महिलाओं के स्वास्थ्य और आजीविका पर पड़ रहा है। वनों के कटाव के कारण वनोपज की

उपलब्धता कम हो गई है, जिससे महिलाओं के पारंपरिक व्यवसाय प्रभावित हुए हैं।

### सरकारी और गैर-सरकारी पहलें

उर्राँव महिलाओं की स्थिति में सुधार के लिए केन्द्र और राज्य सरकार द्वारा विभिन्न योजनाएँ चलाई जा रही हैं। बेंटी बचाओ बेंटी पढ़ाओ, सुकन्या समृद्धि योजना, और महिला शक्ति केंद्र जैसी योजनाओं के माध्यम से लड़कियों की शिक्षा और महिला सशक्तिकरण को बढ़ावा दिया जा रहा है। झारखण्ड सरकार द्वारा आदिवासी उप-योजना के तहत अनुसूचित जनजाति के विकास के लिए विशेष प्रावधान किए गए हैं।

गैर-सरकारी संगठन भी उर्राँव महिलाओं की स्थिति सुधारने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहे हैं। स्वयं सहायता समूहों के माध्यम से महिलाओं को सूक्ष्म वित्त उपलब्ध कराकर उन्हें आर्थिक रूप से सशक्त बनाने का प्रयास किया जा रहा है। साक्षरता अभियान, व्यावसायिक प्रशिक्षण, और जागरूकता कार्यक्रमों के माध्यम से महिलाओं में आत्मविश्वास जगाने का कार्य किया जा रहा है।

### निष्कर्ष

रामगढ़ जिले में उर्राँव महिलाओं की सामाजिक स्थिति एक जटिल और बहुआयामी मुद्दा है जिसमें पारंपरिक मूल्यों और आधुनिक आकांक्षाओं के बीच समन्वय स्थापित करने की आवश्यकता है। एक ओर जहाँ उर्राँव महिलाएँ अपनी सांस्कृतिक पहचान को बनाए रखना चाहती हैं, वहीं दूसरी ओर शिक्षा, रोजगार, और सामाजिक न्याय की अपेक्षा भी रखती हैं। भविष्य में उर्राँव महिलाओं की स्थिति में सुधार के लिए शिक्षा का प्रसार, आर्थिक अवसरों में वृद्धि, और राजनीतिक प्रतिनिधित्व को बढ़ाना आवश्यक है। साथ ही पारंपरिक ज्ञान और आधुनिक विज्ञान के समन्वय से एक समावेशी विकास मॉडल तैयार करने की आवश्यकता है जो उर्राँव महिलाओं की विशिष्ट आवश्यकताओं और आकांक्षाओं के अनुरूप हो।

उर्राँव समाज की सांस्कृतिक विरासत को संरक्षित करते हुए भी महिलाओं के अधिकारों और गरिमा को सुनिश्चित करना एक चुनौतीपूर्ण कार्य है, लेकिन सामुदायिक सहभागिता, सरकारी पहल, और गैर-सरकारी संगठनों के समन्वित प्रयासों से इसे प्राप्त किया जा सकता है। रामगढ़ जिले की उर्राँव महिलाएँ न केवल अपने परिवार की रीढ़ हैं, बल्कि झारखण्ड के विकास और प्रगति में भी महत्वपूर्ण योगदान दे सकती हैं।

### संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. मिंज, दीवाकर और हंसदा, डेलो माई। (2010). Encyclopaedia of Scheduled Tribes in Jharkhand. ग्यान पब्लिशिंग हाउस, नई दिल्ली। पृ. 45-67.
2. लकड़ा, एलिजाबेथ। (2012). आदिवासी महिलाएँ और सामाजिक परिवर्तन. रांची विश्वविद्यालय प्रकाशन, रांची। पृ. 56-88.
3. कुमार, दीपक। (2018). झारखण्ड के आदिवासियों का आर्थिक जीवन. लोक भारती प्रकाशन, पटना। पृ. 145-172.
4. तिकी, अहलाद (2021). उर्राँव समाज: संस्कृति और परंपरा, राँची: झारखण्ड प्रकाशन, पृ. 45-67.
5. उर्राँव, डॉ. तेतः (2021). 'उर्राँव लोक साहित्य', राँची: कुरुख (उर्राँव) साहित्य अकादमी, पृ. 89-112.
6. वर्मा, रामाकांत (2020). "उर्राँव जनजाति का सामान्य परिचय", झारखण्ड की जनजातियाँ, पृ. 112-130.
7. पाण्डेय, आर.के. और सेनगुप्ता, व्ही. (2013). "जनजातिय महिलाओं की सामाजिक स्थिति में परिवर्तन एवं नशा प्रवृत्ति का अध्ययन", Research Journal of Humanities and Social Science, 4(2), पृ. 145-147.

8. मिंज, डॉ. निर्मल (2009). "इन्नेलता एड़पा उःबनी" (कुडुख़ उपन्यास), राँची: गोस्नर कॉलेज प्रेस, पृ. 156–180.
9. लकड़ा, बिहारी (2018). उराँव महिलाएं: चुनौतियाँ और अवसर, दिल्ली: आदिवासी साहित्य प्रकाशन, पृ. 78–95.
10. उराँव, डॉ. हरि (2015). कुडुख़ भाषा और साहित्य का इतिहास, राँची: झारखण्ड भाषा संस्थान, पृ. 134–167.
11. कोबायशी, मासातो और उराँव, तेत: (2021). 'पुरखर गही खीरी' (उराँव लोक कथाएँ), टोक्यो: टोक्यो विश्वविद्यालय प्रेस, पृ. 203–230.
12. झारखण्ड सरकार (2020). झारखण्ड आदिवासी विकास रिपोर्ट, राँची: जनजातीय कार्य विभाग, पृ. 56–89.
13. भगत, डॉ. नारायण (2019). झारखण्ड का साहित्य और साहित्यकार, राँची: झारखण्ड अध्ययन केन्द्र, पृ. 167–189 .